BIRTH CENTENARY OF UTTAM KUMAR

Uttam Kumar was born on 03 September 1926 in Calcutta, and his name given at birth was Arun Kumar Chattopadhyay. Despite the initial struggles and hardships in his career, he established a distinct identity in Bengali cinema through his acting skills, discipline, dedication, and extraordinary screen presence, which eventually earned him the title of "Mahanayak" (The Great Hero). His first released film, Drishtidan, came out in 1948. During the 1950s, he emerged as one of the leading actor of Bengali cinema and, through films such as Agnipariksha, Saptapadi, Harano Sur, Sagarika, Grihadaha, Jatugriha, Antony Firingee and Chiriyakhana, gained immense popularity while also establishing himself as a serious and versatile actor.

The distinctiveness of Uttam Kumar was not limited merely to his immense popularity. He went beyond his identity as a popular actor and demonstrated remarkable diversity, depth, and sensitivity in his performances. In Satyajit Ray's film Nayak (1966), he powerfully portrayed the inner conflicts, insecurities, and sensitivity of a successful film actor. For his performances in Antony Firingee and Chiriyakhana, he received the National Film Award for Best Actor. Thus, he established both the popular star and the serious actor as equally significant facets in Bengali cinema. His contribution was not confined to acting; he was also actively involved as a producer, director, singer, and music composer, thereby making a multifaceted contribution to the production and development of Bengali cinema.

During his active film career, Uttam Kumar worked in more than 100 films and earned such enduring popularity among millions of viewers in Bengal that his name became synonymous with the Golden Era of Bengali Cinema. His personality and acting transcended the boundaries of the screen and became an integral part of Bengali society, language, popular culture, and collective memory. His distinctive dialogue delivery, personality, style, and emotional portrayal connected him with several generations of audiences. This wide-ranging cultural impact elevated him beyond being merely a successful actor and established him as the "Mahanayak" of Bengali cinema. He passed away on 24 July 1980 at the age of 53, but his popularity and cultural legacy have continued to endure even after his demise. The renaming of the Tollygunge metro station as "Mahanayak Uttam Kumar Metro Station" stands as an important symbol of enduring public honour and respect for him.

The year 2026, marking the birth centenary of Uttam Kumar, provides an important occasion to commemorate his life, art of acting, and central and enduring contribution to Bengali cinema. It is also an opportunity to pay tribute to the Golden Era of Bengali cinema, its rich cinematic traditions, and the contributions of its artists and creators, among whom Uttam Kumar occupies a distinctive and unforgettable place.

The Department of Posts is pleased to issue a commemorative postage stamp on the occasion of the birth centenary of Uttam Kumar. The stamp reflects his unparalleled stature in Bengali cinema and his enduring contribution to India's cultural heritage.

Credits:

Stamps/FDC/Brochure/ Cancellation Cachet	:	Smt. Nenu Gupta
Text	:	Based on the content provided by Ministry of Culture

भारतीय डाक
India Post

डाक विभाग
Department of Posts

उत्तम कुमार की जन्म शताब्दी

BIRTH CENTENARY OF UTTAM KUMAR

विवरणिका BROCHURE

उत्तम कुमार की जन्म शताब्दी

उत्तम कुमार का जन्म 03 सितम्बर 1926 को कलकत्ता में हुआ था और उनका मूल नाम अरुण कुमार चट्टोपाध्याय था। प्रारम्भिक संघर्षों एवं कठिनाइयों के बावजूद उन्होंने अपने अभिनय कौशल, अनुशासन, लगन और असाधारण स्क्रीन व्यक्तित्व के बल पर बंगाली सिनेमा में एक ऐसी विशिष्ट पहचान स्थापित की, जिसने उन्हें कालांतर में "महानायक" के रूप में प्रतिष्ठित किया। उनकी पहली प्रदर्शित फिल्म दृष्टिदान वर्ष 1948 में आई। 1950 के दशक में वे बंगाली सिनेमा के प्रमुख अभिनेता के रूप में स्थापित हुए और अग्नि परीक्षा, सप्तपदी, हरानो सूर, सागरीका, गृहदाह, जतुगृह, एंटनी फिरंगी, चिड़ियाखाना आदि फिल्मों में अपने अभिनय से अत्यधिक लोकप्रियता अर्जित करने के साथ–साथ एक गंभीर एवं बहुआयामी अभिनेता के रूप में प्रतिष्ठित हुए।

उत्तम कुमार की विशिष्टता केवल उनकी अपार लोकप्रियता तक सीमित नहीं थी। उन्होंने लोकप्रिय अभिनेता की अपनी पहचान से आगे बढ़कर अभिनय की विविधता, गहराई एवं संवेदनशीलता का परिचय दिया। प्रख्यात फिल्मकार सत्यजीत रे की फिल्म नायक (1966) में उन्होंने एक सफल फिल्म अभिनेता के भीतर निहित मानसिक द्वंद्व, असुरक्षा एवं संवेदनशीलता को प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त किया। एंटनी फिरंगी एवं चिड़ियाखाना में उनके अभिनय के लिए उन्हें सर्वश्रेष्ठ अभिनेता का राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार प्राप्त हुआ। इस प्रकार, उन्होंने बंगाली सिनेमा में लोकप्रिय स्टार और गंभीर अभिनेता–दोनों की भूमिकाओं को प्रतिष्ठित किया। उनका योगदान केवल अभिनय तक सीमित नहीं था; वे निर्माता, निर्देशक, गायक एवं संगीतकार के रूप में भी सक्रिय रहे तथा बंगाली सिनेमा के निर्माण एवं विकास में बहुआयामी योगदान दिया।

अपने सक्रिय फिल्मी जीवन में उत्तम कुमार ने 100 से अधिक फिल्मों में कार्य किया और बंगाल के लाखों दर्शकों के बीच ऐसी स्थायी लोकप्रियता अर्जित की कि उनका नाम बंगाली सिनेमा के स्वर्णिम युग का पर्याय बन गया। उनका व्यक्तित्व और अभिनय केवल पर्दे तक सीमित नहीं रहा, बल्कि बंगाली समाज, भाषा, लोकप्रिय संस्कृति एवं सामूहिक स्मृति का अभिन्न हिस्सा बन गया। उनकी विशिष्ट संवाद–अभिव्यक्ति, व्यक्तित्व, शैली और भावनात्मक प्रस्तुति ने उन्हें दर्शकों की अनेक पीढ़ियों से जोड़ा। यही व्यापक सांस्कृतिक प्रभाव उन्हें मात्र एक सफल अभिनेता से आगे ले जाकर बंगाली सिनेमा के "महानायक" के रूप में स्थापित करता है। उनका निधन 24 जुलाई 1980 को 53 वर्ष की आयु में हुआ, किंतु उनके निधन के पश्चात भी उनकी लोकप्रियता एवं सांस्कृतिक विरासत निरंतर बनी रही। टॉलीगंज स्थित मेट्रो स्टेशन का नाम "महानायक उत्तम कुमार मेट्रो स्टेशन" रखा जाना उनके प्रति स्थायी सार्वजनिक सम्मान का एक महत्वपूर्ण प्रतीक है।

वर्ष 2026, उत्तम कुमार की जन्म शताब्दी, उनके जीवन, अभिनय–कला तथा बंगाली सिनेमा में उनके केंद्रीय एवं स्थायी योगदान को स्मरण करने का महत्वपूर्ण अवसर है। यह अवसर बंगाली सिनेमा के स्वर्णिम युग, उसकी समृद्ध सिनेमाई परंपरा तथा उसके कलाकारों एवं रचनाकारों के योगदान के प्रति सम्मान व्यक्त करने का भी अवसर है, जिसमें उत्तम कुमार का स्थान विशिष्ट एवं अविस्मरणीय रहा है।

डाक विभाग उत्तम कुमार की जन्म शताब्दी के अवसर पर स्मारक डाक टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है । यह डाक टिकट उनके बंगाली सिनेमा में अप्रतिम स्थान तथा राष्ट्रीय सांस्कृतिक विरासत में उनके स्थायी योगदान को प्रतिबिंबित करता है।

आभार:

डाक–टिकट/प्रथम दिवस आवरण/विवरणिका/

विरूपण कैशे	:	श्रीमती नीनू गुप्ता
पाठ	:	संस्कृति मंत्रालय द्वारा प्रदत्त सामग्री पर आधारित

तकनीकी आंकड़े
TECHNICAL DATA

मूल्य	:	1000 पैसे
Denomination	:	1000 p
मुद्रित डाक–टिकटें	:	202800
Stamps Printed	:	202800
मुद्रण प्रक्रिया	:	वेट ऑफसेट
Printing Process	:	Wet Offset
मुद्रक	:	प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	:	Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at Philately Bureaus across India and online at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the Stamps, Miniature Sheets, First Day Cover and Information Brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 15.00